[Shri K. K. Shah]

comes into operation immediately so that hoarding and other things do not take place. Therefore, when the Finance Bill is introduced in the House, it is that time from when the Finance Bill will be operative. Now a question was raised in the other House, just as my hon. friends have raised the question here, as to what happens to the intermediate period of four hours. On that point also clarification was given in the House that nobody can take excise duty as provided in the Finance Bill till the Finance Bill is introduced. Therefore, the question of three or four hours will not make any difference. . .

[MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair]

SHRI S. N. MISHRA: The question is not only. . .

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him finish.

SHRI K. K. SHAH: So far as this House is concerned, the Finance Bill will come here . . .

श्री राजनारायण : चेयर ने कह दिया है कि इन, सब बातों पर विचार किया जायेगा, फिर इसके बाद कुछ कहना व्यर्थ है ।

श्री के० के० शाह : जी हां ।

REFERENCE TO ARREST OF SHRI RAJNARAIN IN AHMEDABAD

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन् हमारा एक स्टेटमेंट है । हमे चेयर ने इ स बात को कहने की आज्ञा दी है और इसलिए मै अपने साथ होने वाले अन्याय के सम्बन्ध में सदन के सम्मानित सदस्यों की सेवा में अर्ज करना चाहता हूं । 28 फरवरी और पहली मार्च को अहमदाबाद में अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन था । 28 तारीख को हम उस सम्मेलन में बोल रहे थे और उसी समय मुझे मालूम हुआ कि यहां पर विक्टोरिया पार्क में विक्टोरिया रानी की मूर्ति है । तो बोलते समय हमने कहा कि विक्टोरिया रानी की मूर्ति सार्वजनिक स्थान में रहना राष्ट्र के लिए अपमान है । किसी विदेशी शासन की मूर्ति आजाद मुल्क में सार्वजनिक स्थान में रहे, इस चीज को मैं कतई पसन्द नही करता हूं और यह राष्ट्रीयता के विरुद्ध है । दुनिया का कोई भी मुल्क ऐसा नहीं मिलेगा, जहां इस तरह से सार्वजनिक स्थान में विदेशी शासक की मूर्ति खड़ी हो । मैं "शासक" शब्द बार बार कह रहा हूं, इसको याद रखा जाना चाहिये । तो मैंने कहा कि 1957 में बनारस में हमने विक्टोरिया रानी की मूर्ति तोडी थी, जिसमें हमें 19 महीने की सजा हुई और 400 रुपये जुर्माना हुआ । तो यहां पर मूर्ति क्यों रहे और क्या यहां के नवयुवकों में राष्ट्रीय उमंग नही है ? मैं कल उस स्थान में चलूंगा । यह बात 28 तारीख को वहां पर मैंने कही कि मैं कल वहां पर जाऊंगा । लेकिन 2, 3 बजे रात ही कुछ राष्ट्रीय भावना मे सराबोर युवकों ने विक्टोरिया रानी का हाथ, नाक, मुंह और कान काट दिये । जब दूसरे दिन सुबह हमें इस बात का पता चला तो हमने सोचा कि कम से कम वहां चल कर देख तो लिया जाय कि अब उस रानी को वहां पर हटाने की आवश्यकता है या नही । तो जब मैं उस स्थान में जाता हूं, तो देखता हूं कि उस स्थान को पुलिस चारों तरफ से घेरे हुए है । मेरे साथ अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्रीपाद केलकर जो महाराष्ट्र के ख्याति प्राप्त साहित्यकार हैं, वे भी थे । वहां पर पुलिस ने हम लोगों को घेर लिया । हमने पुलिस से केवल यह कहा . . .

श्री भूपेश गुप्त (पश्चिमी बंगाल) : विक्टोरिया का नाक काट दिया ।

श्री राजनारायण : जब हम वहां पर पहुंचे तो पुलिस ने कहा कि हम तुम्हें वहां नही जाने देंगे । पुलिस ने हमारा नाम पूछा तो हम

नाम भी बतला दिया और पता भी बतला दिया। इस पर पुलिस वालों ने कहा कि हमें हुक्म दिया गया है कि हमें वहां पर नहीं जाने दिया जायेगा। इस पर हमने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि हम उस स्थान तक जायें। इस पर पुलिस वालों ने हमको घेर लिया। विक्टोरिया रानी की जहां पर मूर्ति थी, उसके चारों तरफ लोहे की दीवार थी और उसके फाटक में ताला बन्द था। और हम लोग उसी के पास पुलिस के घेरे में घिरे हुए थे। विक्टोरिया रानी की मूर्ति को चारों तरफ कपड़े से ढांक दिया गया था और यह पता नही चल रहा था कि उसके सिर पर चोट लगी है या नहीं। हमने पुलिस वालों से कहा कि तुम मूर्ति में से कपड़ा हटा दो ताकि हम देख लें और उसके बाद हम चले जायेंगे। उन्होने कहा कि हम आपको गिरफ्तार करते हैं और इस तरह से हमको और श्री केलकर को पुलिस के दरोगा ने गिरफ्तार कर लिया। इस तरह से 12 बजे से ले कर एक बजे तक हमें पुलिस हिरासत में वगैर कोई कानून के अहमदाबाद में बिठलाया रखा गया।

अब देखा जाय। इसके बाद वहां पर कई मजिस्ट्रेट आये और कई पुलिस के आफिसर आये और उन्होने पुलिस वालों को कहा कि तुमने इन्हें गिरफ्तार क्यों किया। जब ये विक्टोरिया की मूर्ति पर से कपड़ा हटाने के लिये कह रहे थे, तो उसको हटा क्यों नही दिया। जब कपड़ा हटाया गया तो हमने देखा कि उस मूर्ति के मंह, कान, नाक और हाथ कटे हुए थे जो कि वहीं पर गिरे हुए थे। इसके बाद पुलिस वालों ने कहा कि अब आप जाइये और अब आपकी गिरफ्तारी समाप्त। तो मै यह जानना चाहता हूं कि हमारी गिरफ्तारी की सूचना आपको मिली; क्योंकि वह दारोगा कहता था कि यह मामला पार्लियामेंट में उठाया जायेगा, यह मैं जानता हूं। हमने इस संबंध में सचिवालय से पूछा कि हमारी गिरफ्तारी की सूचना मिली है, तो मालूम हुआ कि यहां पर भी नही आई है, तो मैं यह निवेदन करना चाहता हू कि जब हमें अहमदाबाद मे विक्टोरिया पार्क में एक घंटे तक लगातार पुलिस की कस्टेडी में रखा गया, तो उसके बारे में सूचना आपको क्यों नही दी गई। इस तरह से जो अनियमित और अनकांस्टीट्यूशनल काम जो गुजरात सरकार ने किया, उसके बारे मे आप जानकारी क्योंकि गिरफ्तारी के बाद हमने वहां के चीफ मिनिस्टर को इस घटना की पूरी जानकारी करा दी थी कि आपकी पुलिस ने हमें एक घंटे तक अरेस्ट करके रखा।

तो मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि हमें गिरफ्तार कर के वहां की सरकार ने अवैध और गैर-कानूनी काम क्यो किया है और इसके बारे में आपको सूचना क्यों नहीं दी हम को गिरफ्तार क्यो किया गया और उसकी सूचना यहां पर क्यों नही भेजी गई? इसके आगे हमको निवेदन यह करना है कि--गुजराल साहब यहां बैठे थे--इतना बड़ा सम्मेलन हो रहा है, इतना बड़ा प्रदर्शन हो रहा है, मगर चूंकि "अंग्रेजी हटाओ" है, कहीं रेडियो में नही आया। हम लोगों की गिरफ्तारी हुई, तमाम अखबारों में आया, तमाम फोटो लिये गये, लेकिन कही रेडियो मे नही आया। क्या यह सचमुच इन्दिरा रेडियो हो कर रहेगा या आल इंडिया रेडियो रहेगा। मै फिर निवेदन करता हूं और जोर दे कर कहना चाहता हूं कि अगर जनतन्त्र के लिए तनिक प्रेम है, आल इंडिया रेडियो को आल इन्दिरा रेडियो मे परिवर्तित नही होना चाहिये। चूंकि सदन में कई बार कहा जा चुका है कि सरकारी साधनों का दुरुपयोग न हो, इसलिये मैं आपसे निवेदन करूं कि आप सूचना विभाग से जानकारी मांगे। रेडियो में कोई तिवारी थे, उन्होंने कहा कि हमारे रेडियो को सारी जानकारी हो गई है, हम लोग यह-यह खबर दे रहे हैं, मगर हमने रेडियो में कहीं नही सुना कि "अंग्रेजी हटाओ

[श्री राजनारायण]

सम्मेलन" के बारे में या अहमदाबाद की गिरफ्तारी के बारे में या विक्टोरिया की मूर्ति टूटने के बारे में रेडियो ने कहीं भी समाचार दिया है। इसकी जानकारी आप करें। सरकारी साधनों का दुरुपयोग बड़े पैमाने पर हरगिज नहो होना चाहिये ।

एक गलत बात कुछ अखबारों में निकली। दिल्ली के कुछ अखबारों में पढ़ा No arrest was made. उन्होंने लिखा है कि केस कुछ लोगों के खिलाफ दायर है, मगर कोई गिरफ्तारी नहीं हुई। यह बात गलत है। मालूम होता है कि अहमदाबाद के स्थानीय सम्वाददाताओं ने शायद वहां की सरकार या पुलिस अधिकारियों से मिलकर इस बात को दबाने और छिपाने के लिए यहां खबर कराई होगी कि कोई गिरफ्तारी नहीं हुई क्योंकि परपजली, पर्टिकुलरली यहां के अखबारों ने क्यों लिखा कि मुकदमा तो दायर है, मगर कोई गिरफ्तारी नहीं हुई जबकि गिरफ्तारी हुई थी। यह बात सत्य है। वहां के लोग और सम्मेलन के प्रमुख लोग इस बात के साक्षी थे।

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir, you have to give a ruling. If you do not give it now, you may give it later. But I say you have to give a ruling. My friend, Mr. Rajnarain, stated that he was physically moved and put in the custody of the police. Obviously it was illegal, totally illegal, if it was not under law and if he was not under arrest. Now we cannot dispute the fact that he had been taken into the police custody and detained there for two hours or so. First of all, an explanation should have come to you. No intimation was sent to you. It is not necessary that he must be produced before a Magistrate. The police could have also sent the information through proper authority. If they have not done it, they are at fault. Sir, you will kindly ask the Chief Minister and the Home Minister of Gujarat to furnish an explanation how a Member of Parliament could be taken and detained in custody so illegally and nothing is being done against the police. Therefore, Sir, it is a matter for your intervention.

Then, as far as *Indiraji hatao* is concerned, it seems Mr. Rajnarain went there saying *Indiraji hatao* and Mr. Hitendra Desai responded to his word by saying *Rajnarain hatao . . . (Interruption)*.

श्री राजनारायण : इन्दिरा जी हटाओ नहीं, "अंग्रेजी हटाओ"।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is all right. The House stands adjourned till 2:30 P.M.

The House then adjourned for lunch at forty-three minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at half-past two of the clock, *Mr.* DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

ANNOUNCEMENT *RE* ALLOTMENT OF TIME FOR GOVERNMENT AND OTHER BUSINESS

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have to inform Members that the Business Advisory Committee at its meeting held on Friday, February 27, 1970, recommended allocation of time for Government legislative and other business as follows:—